

## माइसीलियम ईटें

**स्रोत: TH**

**जलवायु परिवर्तन** को देखते हुए, निर्माण उद्योग **नमिन कार्बन वाले बकिलों** की तलाश कर रहा है, और **माइसीलियम ईटें** एक आशाजनक नवाचार के रूप में उभरी हैं।

- **माइसीलियम ईटें: कवक बीजाणुओं**, भूसी और चूरा से निर्मित **माइसीलियम ईटें हल्की, रेशेदार संरचना बनाती हैं**, जिनका पर्यावरण पर कम प्रभाव पड़ता है, जबकि पारंपरिक मट्टी की ईटों से **प्रतिवर्ष लगभग 300 मिलियन टन CO<sub>2</sub> उत्सर्जित** होता है।
  - वे **बायोडिग्रेडेबल, अग्निरिधी, हल्के और अच्छे ताप अवरोधक** होती हैं, जो उन्हें आंतरिक पैनलिंग, फिल्टर और इलेक्ट्रॉनिक्स के लिये उपयुक्त बनाते हैं।
  - संभावित अनुप्रयोगों में आंतरिक पैनलिंग, लकड़बन्दी फिल्टर, खेल उपकरण और इलेक्ट्रॉनिक घटक शामिल हैं।
- **माइसीलियम ईट को अपनाने में बाधा उत्पन्न करने वाली चुनौतियाँ:** माइसीलियम ईटों की **भार वहन क्षमता कम** होती है, **नमी अवशोषण क्षमता अधिक** होती है, तथा जैवमिनीकरणीयता और **दीमकों** के प्रति संवेदनशीलता के कारण इनका **जीवनकाल भी कम** होता है, जिससे ये **कंक्रीट** की तुलना में कम धारणीय होती हैं।
  - भारत में **उष्णकटिबंधीय मौसम की स्थिति, उच्च आर्द्रता और बुनियादी ढाँचे की कमी** के कारण व्यापक पैमाने पर **वर्ग निर्माण महंगा और अव्यावहारिक** हो जाता है।
- संभावित समाधान: **अग्निरिधी एवं अल्ट्रा वायलेट कोटिंग्स** अग्निरिधी और स्थायित्व में सुधार कर सकती हैं, जबकि **अनुसंधान एवं विकास** और **नीति समर्थन मट्टी की ईटों** के साथ प्रतिस्पर्धात्मकता को बढ़ा सकते हैं।



और पढ़ें: [निर्माण क्षेत्र में ऊर्जा दक्षता](#)

